TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

बिहार दिवस विशेष

होली विशेष

मार्च 2025

अंक 7

मासिक कविता संग्रह

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज काव्य संग्रह

पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।

यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।

पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।

पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

पद्यपंकज काव्य संग्रह

प्रकाशन सहयोग

संपादक

देव कांत मिश्रा
मध्य विद्यालय धवलपुरा,सुलतानगंज,
भागलपुर(टीम लीडर)

आवरण एवं चित्रण

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपुर सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

सम्पादक की कलम से....

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

बिहार की गौरव गाथा

जननी थी यह ज्ञान की, वैदिक युग का मान था,
गौतम की तपभूमि बन, बुद्ध का संज्ञान था।
विष्णु का वरदान पाकर, जन्मा यह प्रदेश था,
जनक की थी भूमि पावन, सीता का संदेश था।
नालंदा की दीपशिखा, गगन में जो प्रखर जली,
विश्व के हर कोने तक,भारत की यह ध्वनि चली।
अशोक सम्राट जब बना, शांति का संकल्प था,
चक्रधर की भूमि का, इसका न कोई विकल्प था।
पलटा जब इतिहास का, कालचक्र जब घूमता,
तुर्क, अफगान, मुग़ल सभी, संग बिहार चूमता।
शेरशाह का किला बना, नीति का वह ग्रंथ था,
सड़क से संचार तक, प्रशासन का मंत्र था।
विद्रोहों की ज्वाला में, फूंक दिया अंगार को,
बक्सर की रणभूमि ने, छेड़ दिया बिहार को।
कुँवर सिंह की तलवार, झुकी नहीं कभी कहीं,
मातृभूमि की रक्षार्थ, इतिहास बन गई तब यहीं।
चंपारण की भूमि पर, सत्य का जब दीप जला,
महात्मा के पथ से फिर, देश यह आगे बढ़ चला।
जयप्रकाश की हुंकार, लोकशक्ति का मंत्र थी,
संपूर्ण क्रांति से हुई, जन स्वाभिमान की तंत्र थी।
अब विज्ञान, तकनीक में, नाम है बिहार का,
ज्ञान-ज्योति फिर जल रही, जागरण है द्वार का।
नए सपनों की उड़ान, नव निर्माण का शोर है,
प्रगति के हर पथ पर, बिहार का भी जोर है।
अब स्मार्ट हो रहे गाँव, शहर भी हो रहे बड़े,
नए उद्योगों के संग, बढ़ रहे हैं हम खड़े।
आईआईटी, मेडिकल, शिक्षा का विस्तार है,
नव बिहार की ओर हम, बढ़ रहे, यह संचार है।
संस्कृति और कला यहाँ, गूँजती हर बोल में,
मगही, मैथिली, भोजपुरी, सुर बहें अनमोल में।
कवि हृदय रचता “गौरव”, गाता इस इतिहास को,
गौरवशाली बिहार का, पाता नवीन विश्वास को।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि.रसलपुर,फतुहा, पटना,बिहार

मेरा बिहार मेरी पहचान

बिहार की माटी का क्या कहना,
हर कण में बसा एक गहना।
ज्ञान की गंगा यहीं से बही,
बुद्ध की धरती यही रही ।
पाटलिपुत्र के गौरव की गाथा ,
चाणक्य नीति के यश की व्यथा।
गौतम बुद्ध ने दी थी शिक्षा,
अहिंसा,करुणा की सत्य परीक्षा।
नालंदा और विक्रमशिला,
ज्ञान का अद्भुत था सिलसिला।
जहाँ विदेशी आकर पढ़ते थे,
ज्ञान की ज्योति गढ़ते थे।
गंगा की लहरें गाती हैं,
मैथिली, मगही लहराती हैं।
भोजपुरी की मीठी बोली,
जैसे आम की डाली झोली।
लिच्छवी का लोकतंत्र यहाँ था,
जिसने दुनिया को राह दिया था।
सम्राट अशोक की भूमि यही,
सत्य अहिंसा का मार्ग सही।
यहाँ का खेत सोना उगाता,
किसानों का श्रम मुस्काता।
गेहूँ, मक्का, धान की खेती,
हरियाली से हँसती धरती।
छठ पूजा का पावन त्यौहार,
सूर्य उपासना का उपहार।
माटी का दीया जब जलता है,
सारा बिहार पुलकित रहता है।
कुशवाहा, यादव, भूमिहार,
सब मिलकर रहते सदा तैयार।
भाईचारे की बस्ती है यह,
प्रेम-संबंध की कश्ती है यह।
भोजपुरी गीतों का होड़,
हर दिल को दे देता जोर।
लोरी में जब माँ गाती है,
माटी भी सोहर सुनाती है।

मधुबनी की खिलती चित्रकारी,
हाथों में लगती जैसे फुलवारी।
कला-संस्कृति की शान है यह,
बिहार मेरा अभिमान है यह।
पटना, गया, मुजफ्फरपुर,
बक्सर, दरभंगा भागलपुर।
हर कोना इसका इतिहास कहे,
हर गली में यहाँ मधुमास बहे।
यहाँ की रोटी में प्यार बसा,
माँ के हाथों का स्वाद बसा।
लिट्टी-चोखा का क्या कहना,
सत्तू का स्वाद भी है गहना।
यहाँ का मौसम सुहाना है,
गंगा का पानी भी प्यारा है।
हर आँगन में तुलसी चौरा,
मन में बसे माँ गंगा डोरा।
कदम-कदम पर वीरों का मान,
बाबू वीर कुँवर सिंह की शान।
गाँधी के सत्याग्रह का मंत्र,
वो चंपारण बना था तंत्र।
यहाँ की मिट्टी में सोना है,
कर्मठ जनों का नाम सलोना है।
मेहनत में जिसका नाम बड़ा,
वो बिहार के राहों में खड़ा।
धरती पर स्वर्ग का एहसास,
मेरा बिहार मेरा विश्वास।
इसके कण-कण में बसी है जान,
मेरा बिहार मेरी पहचान।

भोला प्रसाद शर्मा
डगरूआ, पूर्णिया, बिहार

बिहार की शान

अखिल भारतवर्ष   में,
बिहार की अलग पहचान है।
यह महावीर संग बुद्ध की माटी है,
यह बिहार की शान है।
उत्तर में नेपाल है स्थित,
दक्षिण में झारखंड है।
पूरब में बंगाल है स्थित,
पश्चिम में उत्तर प्रदेश है।
रणबाँकुरे कुँवर सिंह जी,
आरा में बड़े मशहूर थे।
उनकी गाथा योद्धा की थी,
अंग्रेज भागने को मजबूर थे।
गंगा, कोसी, गंडक नदियाँ,
ये लहराती हमारी शान हैं।
राजेंद्र बाबू, जयप्रकाश भी
हम सब के अभिमान हैं।
माटी जो सोना उगले,
ऐसी प्यारी माटी बिहार की।
जिस धरा पर हरियाली छाई,
ऐसी अंगड़ाई धरा बिहार की।
भाँति भाँति की भाषा धरा पर,
बोली भी बड़ा अमोल है।
सब होते हैं इसके वश में,
शब्द भी इसके अनमोल हैं।

कवियों की धरती है यह,
संगीत का बड़ा आगार है।
गीतों का रसधार है बहती ,
यह बड़ा सृजनहार है।
मधुबनी की हो पेंटिंग कला
या भागलपुर का रेशमी उद्योग हो
मुजफ्फरपुर की लीची सुस्वादु
या सिलाव का खाजा मशहूर हो
हो ककोलत का झरना सुरम्य,
या गोलघर बिहार की पहचान हो
राजगीर का प्रसिद्ध सीस पुल हो
या नालंदा, विक्रमशिला हमारी शान
अब न खंडित हो इसका,
यह हम सबका अरमान है।
सब हों इसके भरे पूरे,
यही इस माटी का फरमान है।
आएँ हम सब शीश नवायें,
इस माटी का कर्ज चुकायें।
जन्मभूमि यह धरा हमारी,
आएँ सब मिल इसे बढ़ायें।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड-बंदरा, जिला-मुजफ्फरपुर)

हाँ मैं बिहार हूँ

देश का गौरव हूँ मैं
मेरा स्वर्णिम इतिहास है,
चंद्रगुप्त मौर्य के शासन का
चाणक्य की नीति का
साक्षात मैं प्रमाण हूँ,
हाँ मैं बिहार हूँ।
विश्व का प्रथम लोकतंत्र
लिच्छवी गणराज्य यहाँ,
सिकन्दर के विजय रथ को
रोकने का साहस मुझमें
बिहार का निडर संतान हूँ
हाँ मैं बिहार हूँ।
बुद्ध के अहिंसा का
क्षमा,शील,दान-दया का
देकर संदेश मैं
रचता इतिहास हूँ
हाँ मैं बिहार हूँ।
महावीर के प्रेम का
शांति के संदेश का
उनके साक्षात दर्शन का
मजबूत आधार हूँ
हाँ मैं बिहार हूँ।
नालंदा और विक्रमशिला
अद्वितीय शिक्षण संस्थान यहाँ
शिक्षा का अलख जगाया
बिहार को ज्ञान केन्द्र बनाने का
निरंतर चलता अभियान हूँ
हाँ मैं बिहार हूँ।
गुरु गोविन्द सिंह के
साहस और बलिदान का
और उनकी वीरता का
सभी को आभास है
हाँ मैं बिहार हूँ।

भवानंद सिंह
मध्य विद्यालय मधुलता
रानीगंज, अररिया

बिहार दिवस की पहचान है

बिहार दिवस की पहचान है, नव संकल्पों की बात है,
शिक्षा, श्रम, सम्मान हमारा, प्रगति पथ की सौगात है।
धरती इसकी वीर प्रसूता, गूँजे इसकी जय-जयकार,
बुद्ध, महावीर के संदेशों से, दुनिया में फैला उजियार।
परिश्रम से ही बढ़े प्रदेश, श्रम का जग में मान करें,
स्वाभिमान की ज्योति जलाकर, आत्मबल का गान करें।
बेटी-बेटा संग बढ़ें आगे, भेद-भाव को त्याग दें,
नशा-मुक्त, अपराध-विहीन हो, ऐसा सुंदर राग दें।
मिल-जुल कर हम श्रम करें, हर हाथ को रोजगार दें,
निर्धनता के तम को हर कर, सपनों को आकार दें।
बोली-बानी, रीति-रिवाजें, स्नेह-सुधा की धार हैं,
संस्कृति अपनी अमर धरोहर, जिससे हम सरताज हैं।
बिहार दिवस पर हम सब मिलकर, नव निर्माण करें प्रबल,
सद्भाव, श्रम, शिक्षा से, रच दें इतिहास फिर से बन सबल।

सुरेश कुमार गौरव,
प्रधानाध्यापक
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना, बिहार

वन्य जीव बचाएँ, प्रकृति महकाएँ

वन उपवन के प्राणी प्यारे,
जीवन के ये शुभ सितारे।
धरती का ये संतुलन बनाएँ,
प्रकृति की नित शोभा बढ़ाएँ।
शेर दहाड़े वन जंगल में जाकर,
हिरण नाचे कुलांचे भर कर।
मोर-मयूर करें सब अनोखे नृत्य,
बुलबुल,कोयल करें संगीत-सा कृत्य।
गज के झुंड चले होकर मदमस्त,
वन का हर कोना सजीव अलमस्त।
नदियों में मछलियाँ तैरते जाएँ,
उड़ें पखेरू नभ को करीब पाएँ।
पर मानव ने इसे खूब बिगाड़ा,
शिकार कर वन को उजाड़ा।

पेड़ कटे तो आश्रय उजड़े,
निर्दोष जीव संकट में पड़े।
सिंह, गज, बाघ, गैंडा प्यारे,
अब सब संकट में पड़े बेचारे।
लोभ में मानव बनता हत्यारा,
जंगल को करता बंजर सारा।
अब भी समय, चेत हमें अब,
बचा लें इनका जीवन सब।
न विटप कटे,न ही जीव मरें,
धरती पर सब संग विचरें।
विश्व वन्य जीव दिवस मनाएँ,
वन्य संरक्षण का दीप जलाएँ।
प्राणी बचेंगे, तब वन लहराएँ,
तभी धरा पर सुख मुस्काएँ।

सुरेश कुमार गौरव
'प्रधानाध्यापक'
उ. म. वि. रसलपुर,फतुहा, पटना (बिहार)

जन्नत भी वही, जहाँ भी उसी से

जन्नत भी वही, जहाँ भी उसी से,
पूछो दिल से राज, हर दिल के आईने से।
किस रूप में उसे देखूँ, हर रूप में समाए,
जीवन है उसी से, वह हर दिल में मुस्कराए।
घर शोभता उसी से, वह घर की राज लक्ष्मी है,
जीवन उसी से मिलता, उसमें किस बात की कमी है।
माँ की ममता भी वही, दिल की धड़कन भी सही है,
घर की दुर्गा भी वही, घर की सरस्वती भी वही है।
किस किस का नाम लूँ मैं, जो दिल पर हैं छाई,
जमाने की महफिल में, जो हिजाब बनकर आई।
मुस्करा कर जरा कह दो, यह जग भी उसी का,
उसके ही चलते, इस जग में नाम है सभी का।
कब सोई वह रहती, कब सोने की है फुर्सत,
दिल में उसकी पली है, हजारों उसके हसरत।
मंजिल उसकी यही है, घर स्वर्ग-सा बन जाए,
है दिल में मचलती, बच्चों पर प्यार लुटाए।
घर की तकदीर भी वही, तदवीर भी वही है,
अपने दिल से जरा पूछो, घर की तस्वीर भी वही है।

वह सम्मान की कली, गई बरसों से छली है,
पर अरमान है उसके दिल में, वह भी गोद में पली है।
कोमल वदन है उसकी, वह कोमलांगी कहलाए,
हर जिया में रूप उसकी, हर रूप में जगमगाए।
माता की है ममता, पापा का दुलार है वह,
घर के हर कोने में बसी, प्रियतम का प्यार है वह।
सम्मान की है मूरत, पर अब भी मुश्किल में पड़ी है,
लगन बढ़ने की है उसमें, वह हर राह में खड़ी है।
नारी है दिल का तार, जो हर दिल को जोड़ती है,
घर के सुख खातिर, वह अपने सपने भी छोड़ती है।
अब भी राहें हैं उसकी, मुश्किल पर हौसले की धनी है,
उसमें कुछ कर गुजरने की, तमन्ना उसके दिल में जो ठनी है।
ऐसा सम्मान दे दो केवल महिला दिवस पर न याद आए,
कोई न गिला शिकवा, जो अब फरियाद बनके छाए।

अमरनाथ त्रिवेदी”
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड-बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

प्रेम की पराकाष्ठा

एक आहट जैसे प्रिय के पाँवों की हल्की चाप,
एक सुखद अहसास ऐसे जैसे स्नेह रस से सींचती माँ,
एक मनमोहक अनुभूति ऐसे जैसे कोयल की कूक,
एक सुंदर मुखड़ा ऐसे जैसे चाँदनी रात में निकला चाँद,
घनघोर अँधेरे को चीरती एक रोशनी जैसे दीपक की लौ,
छटपटाहट ऐसे जैसे पानी बिना मछली,
प्रेम कुछ ऐसा, जैसे गोपियों संग कृष्ण,
बेचैन मन ऐसे जैसे प्रिय के खो जाने का भय,
प्रतीक्षारत नयन ऐसे जैसे नभ में उमड़ते-घुमड़ते बादल,
सब्र की सीमा ऐसी जैसे पत्थर बनी अहिल्या,
अटल विश्वास ऐसे जैसे राम की प्रतीक्षा में निर्निमेष वैष्णवी
नयन तृप्त पल ऐसे जैसे शबरी और राघव का मिलन,
स्नेहासिक्त आलिंगन ऐसे जैसे कृष्ण और सुदामा का मिलन,
और सब कुछ अर्पण जैसे सागर का संगम,
परम सुख ऐसे जैसे दानी हर्ष का दान,
और सब कुछ और अब कुछ नहीं,
कुछ नहीं और सब कुछ।

अवनीश कुमार
बिहार शिक्षा सेवा
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर, बेगूसराय

फणीश्वरनाथ रेणुः विधा- दोहावली

कथा भाव ऐसी सरल, जैसे स्वर दे वेणु।
उपन्यास वैसी लिखें, फनीश्वर नाथ रेणु।

हृदय छूता रहा सदा, उपन्यास का भाव।
उनकी रचना में दिखा, गाँव घर से लगाव।।

दर्द व्यथा दिखला दिए, देकर लेखनी धार।
है जन जीवन किस तरह, विवश और लाचार।।

मैला आँचल से मिला, ऊँचा जिन्हें मुकाम।
मुखरित रचना में रहा, जनहित का हीं काम।।

कविता लेख निबंध से, किए समाज सुधार।
लिखी कहानी पीड़ में, उपन्यास से प्यार।।

क्रांति दूत बनकर दिया, स्वतंत्रता में साथ।
तन मन धन अर्पण किया,राष्ट्र भक्ति धर माथ।।

कितने चौराहे रची, मिले दुविधा निदान।
संवदिया, ठेस नेह से, रचना रचे सुजान।।

लाल पान की बेगमें, होती बहुत विचित्र।
कसम तीसरी से हुई, निर्मित भी चलचित्र।।

राम किशोर पाठक
राप्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

शक्ति का रूप नारी

शक्ति का हीं रूप है नारी,
पूरी सृष्टि समायी है।
धरती से अम्बर तक जिसकी,
धर्म ध्वजा लहरायी है।
दादी, नानी, चाची, मामी,
बुआ रूप में आयी है।
भगिनी, जाया सभी अनूठे,
माता ममता लायी है।
शक्ति का हीं रूप है नारी,
पूरी सृष्टि समायी है।
जीवन संगिनी बनकर पत्नी,
हरपल साथ निभायी है।
बन लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती,
हर घर नारी आयी है।
अपनी चंचलता से जिसने,
बाबुल को महकायी है।
शक्ति का हीं रूप है नारी,
पूरी सृष्टि समायी है।
वही सूझ-बूझ ले फिर से,
पति का वंश बढ़ायी है।
घर में चौका बरतन करती,
सबके हित मुरझाई है।
त्याग बेड़ी दहलीज की वो,
सरहद तक भी आयी है।
शक्ति का हीं रूप है नारी,
पूरी सृष्टि समायी है।
कला साहित्य क्रीड़ा में भी,
जग में नाम कमायी है।
लक्ष्मीबाई बनकर जिसने,
अरि को धूल चटायी है।
बचा कहाँ है क्षेत्र जगत में,
नारी नहीं समायी है।
शक्ति का हीं रूप है नारी,
पूरी सृष्टि समायी है।
पढ़े लिखे आजाद रहे वो,
बने नहीं सौदायी है।
पौरुषता नारी में ऐसा,
नतमस्तक पुरुषायी है।
पाठक भला तभी तक समझे,
जबतक वह वरदायी है।
शक्ति का हीं रूप है नारी,
पूरी सृष्टि समायी है।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

वसंत

पुलकित नवीन किसलय ले
नित कहता नयी कहानी
मानवता की दुर्दशा देख
उसकी भी खो गयी जवानी।
सुरभित पवन से करता फागुन
वसंत आगमन की तैयारी
लाल, पीले, नीले फूलों से
सजी हुई इसकी क्यारी।

करते हैं पशु नित कोलाहल
गाते वसंत के पक्षी गीत
वासंती गीतों को सुनकर
याद आते हैं मन के मीत।
पूछती मुझसे एक मधुबाला
छिपा कहाँ चंचल वसंत
निर्जन वन से जन-जीवन तक
कण-कण में है वह जीवंत।

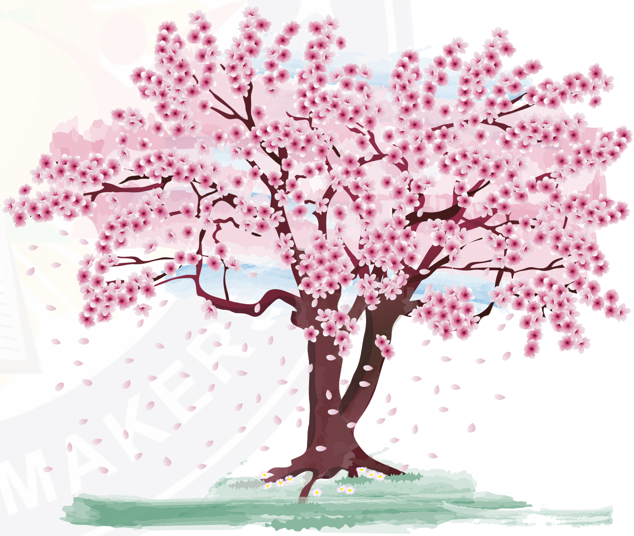

निर्धन-धनी सब एक समान
सबको देता मीठी मुस्कान
नहीं कुछ भी उसको अशेष
मन-मन में जगाती एक शान।
आया वसंत मस्ती में डूबे
धनी,गरीब,भोगी और संत
जीवन देता मृतकों में भी
ऐसा वसंत आया अनंत।
करते हैं हम यह आराधना
तुम यों ही अमर बने रहना
हर मानवता के क्लेश नित्य
नवजीवन संचरित करना।

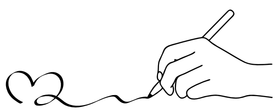

शैलेन्द्र भूषण
प्रधान शिक्षक
न. प्रा. वि. पकड़िया भूमिहारी टोला
प्रखंड-हरसिद्धि, जिला-पूर्वी चम्पारण

होलिका दहन

हर नुक्कड़ और चौराहे पर
साल में एक बार खड़ा होकर
पूछ रही है होलिका।
हर साल मुझे जलाने का
मतलब क्या हुआ?
दिल में शैतान तुम पाले हो
और जलाने का प्रयास
मुझको करते हो।
मैं तो उसी दिन अग्नि में जलकर
ताप में तप गई
पर इस इंसान रूपी
जीव को तो देखो
लाखों बुराइयाँ दिल में
वे स्वयं पाले हैं
और जलाने का प्रयास
मुझको करता है।
भाई भाई में तुम लड़ते हो
कभी जाति के नाम पर
कभी धर्म के नाम पर
कभी मंदिर के नाम पर तो
कभी मस्जिद के नाम पर
नफरत तुम फैलाते हो
और जलाने का प्रयास
मुझको करते हो।
पहले प्रह्लाद जैसा भाव दिल में पालो
देखना फिर होलिका को
हर साल जलाने की जरुरत नहीं
पाक दिल इंसान में
होलिका को रहने की
कोई हसरत नहीं।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया

वो होली का अंदाज़ कहाँ

पीली-पीली सरसों की बगिया,
लहराए खेतों में नव अभिलाषा।
पतझड़ की उदासी को छोड़कर,
लाया वसंत हर्ष की परिभाषा।
प्रकृति ने ओढ़ी हरियाली चूनर,
फूलों में घुली नव मधुर मुस्कान।
कोयल गाए प्रेम का अनोखा हूनर,
मन में जागे नवजीवन का ज्ञान।
हल्की-हल्की बयार में सुगंध बसी,
कुसुमों की बातों में रस घुला है।
रंग-बिरंगे सपनों का उत्सव सजी
हर ह्रदय में वासंतिक प्रेम मिला है।
सरस्वती माँ का हम वंदन करें,
ज्ञान और बुद्धि की हो बरसात।
मन आँगन में रंग वसंत के भरें
मन सद्भावना से भरे हर बात।
वसंत जीवन में भर दे उजियारा,
आशा, उल्लास, उमंग अपार।
वसंत पंचमी का यह पावन पर्व,
लाए हम सब के संग नई बहार।

अवनीश कुमार

बिहार शिक्षा सेवा
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, विष्णुपुर,
बेगूसराय

होली का त्योहार है अनुपम

सब मिलकर हम गाना गाएँ,
होली पर्व खूब मनाएँ।
नई उमंग के नए दौर में,
जरा मन से मैल भगाएँ।
आज नहीं कोई ऊँचा नीचा,
खेलें दिल से होली।
सबके वसन भींगे होते हैं,
हर हाथ में होती झोली।
अपनों संग हम नाचें गाएँ,
खुशियों से हम दिल भर लें।
आज बहुत ही शुभ दिन आया,
हर को प्रेम के वश में कर लें।
होली क्यों आया जीवन में,
इसकी पड़ताल भी कर लें।
होलिका प्रह्लाद के अनोखे प्रसंग को,
चित में जरा भी भर लें।
एक बार विष्णु भक्त प्रह्लाद ने,
फिर से पिता का वचन न माना।
तब पिता बहुत क्रोधित हो,
पुत्र को अग्नि में ही जलाना ठाना।
रची योजना यह थी कि
पुत्र प्रह्लाद भस्म हो जाए।
पर प्रभु की इच्छा इसके विपरीत,
प्रह्लाद पर तनिक भी आँच न आए।

होलिका प्रह्लाद को गोद में ले,
अग्निरोधी चादर लपेट कर बैठी।
उसके मन में अपार खुशी थी,
होलिका स्वयं भी बैठकर ऐंठी।
इतने में आया पवन का झोंका,
उड़ गई चादर होलिका के तन से।
खाक हुई होलिका अग्नि में,
बच गया प्रह्लाद ईश्वर के मन से।
तबसे प्रह्लाद के बचने की खुशी में ,
प्रत्येक वर्ष होली मनाई जाती।
मानो होलिका के दहन करने को ले
चौक चौराहे सम्मत खूब सजाई जाती।
फाल्गुन मास की पूनम रात्रि को,
होलिका दहन खूब होता।
चैत्र मास के प्रतिपदा को,
लोग रंगों में खूब खोता।
इस पावन रंगों के त्योहार के
असली मकसद को हम जानें ।
कभी नहीं किसी से द्वेष भाव हो,
हर इंसान की कीमत को हम मानें।
होलिका दहन के दिन घर में,
नमकीन व्यंजनों से थाल सजाएँ।
चैत्र प्रतिपदा होली के दिन,
पुए, खीर से घर आँगन महकाएँ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

फिर देख बहारें होली की

जब जोर शीत का ढीला हो
मादकता हो उष्ण हवा में
प्रकृति में रंग बिखरते हों
मृदंग का खनक लुभाता हो
ढोलक का शोर बुलाता हो
फिर देख बहारें होली की।

सरसों फूले पीले-पीले
तीसी के फूल खिले नीले
आम्र मंजरी भी खिले खिले
कोयल की तान नशा घोले
प्रकृति का रंग लुभाता हो
फिर देख बहारें होली की।

कण-कण यौवन बिखराये हुए
ऋतुराज वसंत का दस्तक हो
वृक्ष सेमल फूले हो,लाल-लाल
भँवरें करते उसका रसपान
सुगंध पवन की करे सवारी
दिल फूले देख बहारों का
फिर देख बहारें होली की।

वस्त्र नए हों, या फटे-फटे
पर रंग की छींटे नये-नये
ख़ुम का प्यास जब बढ़ता जाय
और, महबूब इसे खूब छकता जाय
छिड़ जाये तान फिर गीतों का
फिर देख बहारें होली की।

मजलिस हो सब यारों का
पकवानों की तश्तरियाँ हो
खुशी खाने की नहीं, खिलाने की
ठंडई भी खूब पिलाने की
आँखों का रंग गुलाबी हो
गालों पर रंगें लाली हो
चहुँओर छटा जब ऐसी हो
फिर देख बहारें होली की।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया, बिहार

होली का त्योहार

गुलाल की खुशबू, अबीर की बौछार,
रंगों में खिल उठे, धरती अपार।
होली आई, खुशियाँ लाई,
हर दिल में उमंग, हर चेहरे पर प्यार।
गूँज रही है गलियाँ, गूँज रहे हैं गीत,
ढोल की थाप पर झूमें, सारा जनजीत।
मिठाइयों की मिठास, गुझियों का स्वाद,
रंग-बिरंगे पकवानों का अपना है अंदाज।
दोस्ती का पैगाम है, भाईचारे की शान,
भूलें सारे गिले-शिकवे, करें सबका सम्मान।
बच्चों की टोली, रंगों में खेली,
हँसी-ठिठोली से, महक उठी होली।
रंग भरो जीवन में, खुशियों से सजा लो,
प्रेम और अपनापन, हर दिल में बसा लो।
चलो मिलकर मनाएँ, यह पावन त्योहार,
रंगों में रच जाए, अपना यह संसार।

भोला प्रसाद शर्मा
डगरूआ,पूर्णिया(बिहार)

होठों पर मुस्कान सजे हर बार होली में

नफरतों का गुबार मिट जाए न हो तकरार होली में,
प्रेम के सुंदर फूल खिल जाएँ हो इकरार होली में।
धरा हो रंगीन, अम्बर भी लगता हसीन,
रंगीन हो सारे नजारे खुशियाँ निसार होली में।
अमीरी-गरीबी के बीच दिखती है खाई,
वो खाई प्रेम से भर जाए देखो यार होली में।
ढोल ताशे के संग-संग बजता रहे मृदङ्ग,
थिरकता तन और मन इस बार होली में।
फाग की मस्ती है छाई देखो प्यारी अमराई,
रंगीन प्रकृति नजारे दिखे बेशुमार होली में।
रंगों से पुते चेहरे कौन काले कौन गोरे,
रंगों के भेद मिट जाए हर बार होली में।
रंग प्रेम और विश्वास का चलो हम लगाएँ,
हर होठों पर मुस्कान सजे बार बार होली में।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय
तेनुआ,गुठनी
सिवान, बिहार

होली आई रे

फाल्गुन की बयार हो,
रंगों की फुहार हो,
संग मौसम मेहरबान हो,
और मन भी बेकरार हो,
जोगिरा स र र उद्गार हो,
तो समझना मेरे भाई,
कि आई होली आई रे।
खुशी और उमंग से,
होली खेलो रंग से,
होली एक ऐसा त्योहार,
मिटा दे सारी दूरियाँ,
पास लाए खुशियाँ अपार,
चलो गाएँ होली गीत रे,
कि आई होली आई रे।।
होली की महत्ता निराली,
टूटे दिलों को पिरो दे जैसे माली,
गिले शिकवे भुला दे जैसे हो काली,
रिश्तों की मान मर्यादा सिखलाती,
एकता और बंधुत्व को बढ़ाती,
संग मिल खेलो होली रे,
कि आई होली आई रे।।

विवेक कुमार
भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय
पुरुषोत्तमपुर, कुढ़नी, मुजफ्फरपुर,

होली सबकी प्यारी है

आओ स्नेहिल रंग उड़ाओ, पावन होली आई है।
बच्चे बूढ़े नर नारी पर, कैसी मस्ती छाई है।।
सुंदर है बच्चों की टोली, सबके कर पिचकारी है।
गली-गली में शोर मचा है, होली सबकी प्यारी है।।
अनुपम प्रेमिल भाव सरसता, जनमानस में लाई है।
आओ स्नेहिल रंग ————————।
सुषमा नित वसंत की देखो, कितनी न्यारी लगती है।
खनक मँजीरे की भी सुन लो, थाप ढोल जब पड़ती है।।
शिकवे गिले मिटाकर गा लो, बात यही सरसाई है।
आओ स्नेहिल रंग ————————।
अहं भाव को सदा जलाकर, प्रभु से प्यार बढ़ाना है।
दीन दु:खियों के बालक को, प्रगति पथ पर चढ़ाना है।।
घृणा भाव की जली होलिका, बात यही बतलाई है।
आओ स्नेहिल रंग ————————।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

सुनीता तेरे धैर्य

चहुँओर हैं छाई खुशियाँ,नवकलियाँ मुस्काई है।
फ्लोरिडा के तट पर देश की बेटी, आज उतरकर आई है।।
साहस शौर्य से भरी वो युवती, धैर्य दृढ़ता का पहन लिबास।
नौ माह अंतरिक्ष में रहकर,अब आई हम सबके पास।।
जिसके साहस पर शीश नवाये, दशों दिशाएँ, तीनों काल।
बाल न बांका हुआ है उसका,दम दम दमके जिसके भाल।।
अंतरिक्ष के वो गर्भ गृह में,सलाद के पौधे उगाकर आई।
अपनों से वो बिछड़ के भी, दुनिया के लिए उपलब्धि लाई।।
हम आकुल व्याकुल थे मानो, एक झलक बस पाने को।
हाथ हिलाकर लौटी सुनीता भारत के मान बढ़ाने को।।
भारत भू के कण-कण महके,महके पावन मेहसाणा।
खुशियों की हो रही हैं बारिश, हुआ सुनीता का जब आना।।
धरती आसमान को एक करी है,नयी प्रयोग कर आई है।
अंतरिक्ष में रहकर वो कितने, अनुभव अपने संग में लाई है।।
बेटा भाग्य से होता पर देखो, बेटियाँ सौभाग्य से आती हैं।
पृथ्वी से लेकर गगन मंडल तक नाम अमर कर जाती है।।
सुनीता तेरे धैर्य दृढ़ता का गान यह जगत दुहराएगा।
जब भी होगी बात तेरी, ये गगन भी शीश झुकाएगा।।
विश्वगुरु भारत की बेटी ने, रचा है फिर से नया इतिहास।
चुनौतियाँ देकर मौत को आई, हँसते-हँसते हम सबके पास।।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी,
पूर्णियाँ, बिहार

वे हँसते- हँसते झूल गये

वें हँसते-हँसते झूल गये, फाँसी को थें चूम गये।
उम्र जवानी वाला लेकर, जोश तुफानी भर लाया।
धूल चटाने अंग्रेजों को, वीर बाँकुरा चल आया।
भारत की बेड़ी को जिसने, कसम तोड़ने की खाया।
अपनी इच्छाओं को जिसने, हँस-हँस कर हवन कराया।
सुखदेव, भगत, राजगुरु यही, देते सबको सीख गये।
वें हँसते-हँसते झूल गये, फाँसी को थें चूम गये।
बारह वर्ष की आयु लिए, घूम रहा गलियारों में।
जालियाँवाला कांड देखकर, कूद पड़ा अंगारों में।
जज्बा उसका फौलादी था, नन्हा अपने यारों में।
गेह परिवार छोड़ा जिसने, सभी पर्व त्यौहारों में।
किया नौजवान भारत सभा, मिल-जुल कर थें गठन नये।
वें हँसते-हँसते झूल गये, फाँसी को थें चूम गये।

निकल पुणे से वीर साहसी, देखा कुछ ऐसा सपना।
फहरा रहें तिरंगा अब तो, लेकर आजादी अपना।
आकर मिले आजाद से वो, क्रांति हेतु सीखा तपना।
लगा राष्ट्र सेवा में वह तो, लुटा दिया सब-कुछ अपना।
मारी गोली सांडर्स मरा, बदला लाला हनन लिये।
वें हँसते- हँसते झूल गये, फाँसी को थें चूम गये।
शहीद-ए-आजम का साथी, सुखदेव सदा कहलाए।
राजगुरु संग मिलकर वे भी, सांडर्स को थें उड़ाए।
केंद्रीय संसद में भगत थें, अंग्रेजों को थर्राए।
लाहौर-षड्यंत्र में तीनों, जैसे मुजरिम कहलाए।
बोल जय-हिंद की जयकारा, चढ़ फाँसी पर सभी गये।
वें हँसते-हँसते झूल गये, फाँसी को थें चूम गये।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

शौर्य का जयघोष

जब भी लगे तुम्हें,
विश्वास तुम्हारा डगमगाने लगा है,
लेकर आशा की मशाल,
दशरथ माँझी-सा आना तुम
एक और प्रहार करना तुम,
हर दीवार गिराना तुम
हर दीवार गिराना तुम।
अगर राह में
लड़खड़ाने लगें कदम,
राणा का चेतक बन आना तुम
क्षितिज तक दौड़ जाना तुम,
हर बाधा लाँघ जाना तुम
हर बाधा लाँघ जाना तुम।
जब भी लगे तुम्हें
शत्रु खड़े हैं चारों ओर,
लक्ष्मी की तलवार बन,
शिवा की कटार बन आना तुम
हर वार का उत्तर देना तुम,
हर अन्याय मिटाना तुम
हर अन्याय मिटाना तुम।
जब भी लगे तुम्हें
साँसें थमने लगी हैं,
रक्त जमने लगा है,
अरुणिमा सिन्हा बन आना तुम
आखिरी दम तक बढ़ना तुम,
शिखर तक पहुँचना तुम
गगन नाम कर जाना तुम
गगन नाम कर जाना तुम।
यदि लगे कि धुँध घनी है,
दीपक बन अंधकार हरना तुम,
अंतिम लौ तक जलना तुम,
हर तमस को रोशन कर जाना तुम
हर तमस को रोशन कर जाना तुम।
यदि लगे कि रात गहरी है,
तो स्वयं दैदीप्यमान सूर्य बन
उगने का संकल्प उठाना तुम,
अंधियारे को हराना तुम
अंधियारे को हराना तुम।
अगर दुनिया कहे कायर हो तुम,
तो खुद को वटवृक्ष बनाना तुम,
और उन्हें बताना तुम
बीज जब मिट्टी में समाता है,
तभी महावृक्ष बन पाता है।
तभी महावृक्ष बन पता है।
अगर लगे कि थक चला हूँ मैं,
तो इतिहास के पन्ने पलटना तुम,
शिवाजी, चंद्रशेखर,भगत सिंह-सा
अपनी शक्ति जगाना तुम,
बन महावीर, पर्वत उठाना तुम
बन महावीर, पर्वत उठाना तुम।
जब भी लगे तुम्हें
अन्याय की सीमा पार हुई
फिर अपना विकराल रूप दिखाना तुम,
बन कृष्ण सुदर्शन उठाना तुम
अधर्म का अंत कर देना तुम
अधर्म का अंत कर देना तुम।

अवनीश कुमार
बिहार शिक्षा सेवा (शोध व अध्यापन उपसम्वर्ग)
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर, बेगूसराय

आया है नववर्ष

प्रतिवर्ष है यह आता
तन-मन को खूब भाता
सृष्टि में फैला अद्भुत
यह कैसा सुखद हर्ष
आया है नववर्ष।
हम कर गये प्रवेश
सदी अगली है विशेष
बीता हुआ हर अब्द
अब बन गया आदर्श
आया है नववर्ष।
शिव की यह सृजित सृष्टि
मानव को मिली दृष्टि
जन-गण है बना आज
स्वयं शक्ति समदर्श
आया है नववर्ष।
दिव्य बनें हर नर-नारी
सुमन सजा हो हर क्यारी
चलें प्रेम पथ पर हम
सबका ऐसा निष्कर्ष
आया है नववर्ष।
मिलजुल प्रण करें आज
भू पर हो रामराज
सुख-शान्ति हो चहुँओर
होवे सबका उत्कर्ष
आया है नववर्ष।

शैलेन्द्र भूषण

प्रधान शिक्षक
न. प्रा. वि. पकड़िया भूमिहार टोला
प्रखंड-हरसिद्धि, जिला-पूर्वी चम्पारण

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

इस वर्ष की ईद

बड़ा सुहाना है, मौसम इस माह का
चेहरे के भाव बताते हैं खुशियों की
रंग खेलते हिन्दू बरसाते फूल मुस्लिम
अता करते नमाजियों पर, बरसाते गुलाब हिन्दू
यही तो रूप रंग है, हमारे भारतवर्ष का।
खेतों में मिश्रित सुगंध फैल रहे हैं
गेहूँ की बालियां, सरसो की फलियां
चने और मसूर की झाड़ियाँ
मटर की लताएं, बरवस ध्यान खीच रहे
देख के किसान इसे मन-मन मुस्का रहे।
शेमल और पलाश, लाल फूल बिछा रहे
आम्र लीची मंजरी, मादकता बरसा रहे
तरबूज खीरा ककड़ी, खेतों में मुस्का रहे
देख के किसान इसे, फुले नहीं समा रहे
प्रकृति होली की रंग, ईद की बधाई दे रही।
निष्कलंक बाल-बालिकाएं, एक दूसरे पर रंग फेक रहे
कोई आधा रोजा रखे, कोई एक रोजा रखे
बाल मन ऐसे प्रफुल्लित हैं जैसे मानो,
सारा रमजान उन्होंने ही अपने शिर रखे हों
होली और ईद की यह छटा बता रही
यही तो रूप रंग है, हमारे भारत वर्ष का।
शंकर अनवर के लिए इफ्तार की खरीदारी कर रहा
ख़ालिद संजय के लिए गुजिया का तोहफा ले रहा
एक दूसरे को होली का गुलाल लगा रहे
आपस में गले लगा कर, ईद की बधाइयाँ दे रहे
यही तो रूप रंग है, हमारे भारत वर्ष का।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट,ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े ।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010